कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

राम नवमी या कृष्णाष्टमी।
वर्ष प्रतिपद, विजयादशमी।।
अमावस दीपोत्सव लाती।
पूर्णिमा खीर पका देती।।
ग्रहण, नक्षत्र, राशिफल भेद।
विश्व ने भारत से जाना ।।
प्रकृति की है अनोखी रचना।
चाँद-सूरज से काल-गणना।।

विक्रम संवत २०८१

हिन्दू नववर्ष

रामनवमी उत्सव की झलकियाँ

राम मंदिर महिला समिति की कार्यकर्ता

कार्यक्रम का आनंद लेते दर्शक

माता शबरी के साथ राम लक्ष्मण संवाद

गोवा बागान महिला समिति

देश भक्ति गीत प्रस्तुत करती हुई बहनें

भावपूर्ण नृत्य प्रस्तुति

श्रीराम के आगमन का आनंद

वक्तव्य रखते हुए अखिल भारतीय कोषाध्यक्ष महेश मोदी

राम लला के आगमन से भाग्य सँवर कर मुसकाते हैं; जन्मोत्सव की बेला पर मन के मयूर खिल जाते हैं।
मर्यादा पुरुषोत्तम के ये प्रसंग प्रेरणादायक हैं; रामनवमी के कार्यक्रम जीवन का बोध कराते हैं।।

कल्याण भारती

वनवासी सेवा, संगठन और संस्कृति संरक्षण हेतु समर्पित

त्रैमासिक पत्रिका
वर्ष 35, अंक 1
जनवरी-मार्च 2024 (विक्रम संवत् 2081)

–: सम्पादक :–
स्नेहलता बैद

-:सह सम्पादक:-
डॉ. रंजना त्रिपाठी

–: सम्पादन सहयोग :–
तारा माहेश्वरी, रजनीश गुप्ता

पूर्वांचल कल्याण आश्रम

कोलकाता कार्यालय :
161/1, महात्मा गाँधी रोड, बाँगड़ बिल्डिंग
2 तल्ला, कमरा नं. 51, कोलकाता-7
दूरभाष : 2268 0962, 4803 4533

प्रांतीय कार्यालय :
29, वार्ड इन्स्टीच्युशन स्ट्रीट
(मानिकतल्ला पोस्ट ऑफिस के पास)
कोलकाता - 6, दूरभाष : 2360 8334

हावड़ा कार्यालय :
24/25, डबसन लेन, 1 तल्ला
हावड़ा - 1, दूरभाष : 2666 2425

–: प्रकाशक :–
संजय रस्तोगी

Registered with registrar of Newspaper for India Under LIC No. WBHN/2000/3887

Published by Bishwanath Biswas, On behalf of Purvanchal Kalyan Ashram, 161/1, Mahatma Gandhi Road, Bangur Building, 2nd Floor, Room No. 51, Kolkata - 700007 and printed at Shreyansh Prakashans, 30 Madan Mohan Talla Street, Kolkata - 700005. Editor : Snehlata Baid

अनुक्रमणिका

- संपादकीय...शुभारंभ नव संवत्सर.. 2
- मकर संक्रान्ति : दानपर्व की सनातन... 3
- राम मंदिर अयोध्या और नागा समाज 4
- वनवासी कल्याण आश्रम के छात्र 7
- जनजाति समाज द्वारा... 7
- नव निर्मित बागमुण्डी छात्रावास... 8
- जनजातीय समाज में होली का उत्सव 9
- धूमधाम से मनाया रामनवमी उत्सव 10
- हावड़ा महानगर की गतिविधियाँ 11
- नई सोच नई पहल 11
- स्वालंबन की ओर एक और कदम 12
- सरकार द्वारा वनवासियों का सम्मान 13
- अमृत वचन 13
- शोक संवाद 14
- वनजीवन के संस्कारों का प्रतिफल 15
- बोधकथा.. पैसों की तंगी 16
- कविता ... प्रकृति की संरचना 16

संपादकीय...

शुभारंभ नव संवत्सर का दिग्दिगंत मंगल मंगल है

हिंदू नव संवत्सर भारतीय काल गणना का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष प्रस्तुत करता है। ऋतुराज बसंत का आगमन, प्रकृति में सौंदर्य की संपत्ति का प्रस्फुटन, शस्य श्यामला भूमि का अमृत वाहिनी नदियों के साथ अवगाहन और पुष्पों का सहज नर्तन हमें आनंदित होने के लिए उत्प्रेरित करता रहता है। भारतीय नव संवत्सर का आगमन शक्ति की जागृति का महोत्सव है। भक्ति की वंदना और आदि चेतन की प्रार्थना का अवसर है। आदिशक्ति परांबा भगवती की उपासना का अवसर तो नव संवत्सर पर होता ही है साथ ही गुड़ी पड़वा, होला मोहल्ला, युगादि, विशु, वैशाखी, कश्मीरी नवरेह, उगाडी, चेटीचंड, चित्रैय तिरुविजा आदि महोत्सव भी नव संवत्सर के इर्द-गिर्द ही परिक्रमित होते हैं।

7 दिन और 12 महीने का वैज्ञानिक संस्थापन ज्योतिषीय काल गणना के अनुसार हमारे शास्त्रों से ही हुआ है जो हमारे नव संवत्सर की वैज्ञानिकता को प्रबल बनाता है। दुनिया के जितने कैलेंडर बने उन्होंने भारतीय काल गणना को आधार के रूप में स्थापित किया। इसके लिए हम सूर्य सिद्धांत आदि ग्रंथों को आधार मानते रहे हैं।

संवत्सर का तात्पर्य वर्ष से है। प्रभव, विभव, प्रजापति आदि साठ संवत्सर होते हैं जो क्रमश: प्रत्यावर्तित होते रहते हैं। संवत्सरों का निर्धारण बृहस्पति ग्रह की स्थिति के अनुसार होता है। विक्रम संवत सौर मास, नक्षत्र मास और चंद्र मास आदि के आधार पर निर्धारित होता है। अगर हमें हमारे भारतीय नव वर्ष की और विक्रम संवत कैलेंडर की महत्ता को समझना है तो हमें भारतीय गणित का, ज्योतिष के ग्रंथों का अध्ययन करना नितांत आवश्यक है। हमारे संवत्सर की वैज्ञानिकता इसी से सुनिश्चित हो जाती है कि इसका आनंद और अभिनंदन समग्र प्रकृति स्वयमेव करती है। सदानीरा नदियां निर्मल हो जाती हैं। नई कोपलों और पुष्पों की मादक बहारों के बीच भगवती की अगवानी होती है। ठीक 9 दिन बाद जगत् पिता जगदीश भगवान श्री रामचंद्र जी का जन्म महोत्सव मनाया जाता है। हमारा नव संवत्सर हमारी चेतना की जागृति का प्रतीक है और भारतीय संस्कृति के समृद्धि और सामर्थ्य का बोध कराता है।

भारतीय नव वर्ष अपने प्राचीन वैभव के साथ पुन: हम सबके बीच प्रतिस्थापित हो इसके लिए प्रत्येक भारतीय का नैतिक दायित्व बनता है कि वह इसकी वैज्ञानिकता और इसके शास्त्रीय महत्व को जन-जन तक लेकर जाए। हमने विदेशी दासता का त्याग किया है लेकिन उसके प्रतीक और संस्कृति आज भी हम पर हावी हैं जिसे उखाड़ कर फेंकने की नितांत आवश्यकता है। जो शुभ है वह स्वीकार्य है, जो निष्प्रयोज्य है और प्रतिकूल है, उसे उखाड़ फेंकने की जरूरत है। आओ नव संवत्सर के सूर्योदय को अपने जीवन के आनंद का महोत्सव बनाएं। सूर्य की प्रार्थना के साथ संवत्सर की सद्भावना को स्वीकारें। मां भारती की अखिल विश्व में पुन: प्रतिष्ठा की आस मन में लिए कल्याण भारती के सभी पाठकों को लोक पर्व होली, नव संवत्सर 2081 एवं श्रीरामनवमी के पावन पर्व की अनेकश: शुभकामनाएं!

- स्नेहलता बैद

मकर संक्रान्ति : दानपर्व की सनातन परंपरा

- डॉ. रंजना त्रिपाठी, कार्यकर्ता, अलीपुर समिति

संक्रान्ति पर्व सूर्यदेव का करता है आराधन,
प्रकृति धर्म संस्कृति का है पर्व बहुत यह पावन,
उत्तरगामी रवि किरणों से सारा जग चमकाता,
मकर संक्रान्ति पर्व सभी का जीवन है महकाता।

साधना-ध्यान और दान-पुण्य की पवित्र परंपरा से जुड़े पावन पर्व "मकर संक्रान्ति" भारत के वैदिककालीन पर्वों में से एक है। हिन्दुओं के अधिकांश व्रत-तीज-त्योहार-उत्सव, धार्मिक पर्व आदि भारतीय महीनों तथा तिथियों की गणना के अनुसार मनाए जाते हैं। इस साल मकर संक्रान्ति 15 जनवरी को मनाई गई। ऐसा माना जाता है कि इस दिन भगवान विष्णु ने राक्षस शंकरासुर को हराया था, जो बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। इस बार की मकर संक्रान्ति सनातन क्रांति बन गई। इस बार की मकर संक्रान्ति और अधिक उत्साहवर्धक इसलिए भी बनी क्योंकि मकर संक्रान्ति से कुछ दिनों बाद ही श्री रामलला की प्राणप्रतिष्ठा अयोध्या में होने वाली थी। मकर संक्रान्ति कल्याण आश्रम परिवार के कार्यकर्ताओं के लिए सम्यक क्रांति का पर्व होता है। मकर संक्रान्ति से पहले ही कोलकाता-हावड़ा महानगर के कार्यकर्ताओं की टोलियाँ राममंदिर प्राणप्रतिष्ठा का अक्षत निमंत्रण लेकर घर-घर पहुँचने लगीं। संपर्क अभियान के इस अद्भुत, अद्वितीय, अकल्पनीय क्षणों के साक्षी बनकर कार्यकर्ता घर घर जाते और नई ऊर्जा के साथ मकर संक्रान्ति में आयोजित होने वाले कैम्पों की तैयारी में जुट जाते।

वनवासी भाई-बहनों के सर्वांगीण विकास के लिए कल्याण आश्रम परिवार प्रतिवर्ष कोलकाता-हावड़ा महानगर में मकर संक्रान्ति कैम्प लगाता है। इस शिविर का उद्देश्य होता है शहरी समाज को इस दानोत्सव महापर्व से वनवासी समाज से जोड़ना। मकर संक्रान्ति कैम्प से वनवासी भाई-बहनों के विकास के लिए वस्तु संग्रह, व्यक्ति संग्रह और अर्थ संग्रह का पावन कार्य संपन्न किया जाता है। इस वर्ष मकर संक्रान्ति कैम्पों की छटा निराली थी। यह दानोत्सव तो था ही, साथ में रामलला प्राण प्रतिष्ठा समारोह के लिये अयोध्या धाम से पूजित अक्षत भी कैम्प के माध्यम से वितरित हो रहे थे। आनन्द की इस बेला में संगठन द्वारा प्रत्येक सहयोगकर्ता को 5-5 दीपकों के पैकेट बनाकर आदर पूर्वक दिये गये। इस प्राप्य को लेने के लिए रामभक्तों की आस्था का सैलाब भी हमारे मकर संक्रान्ति कैम्प का निराला दृश्य बन गया था।

इस बार कोलकाता महानगर में 103 एवं हावड़ा महानगर में 18 कैम्प लगे। दानदाताओं का उत्साह तो अवर्णनीय ही था। हम उनके द्वारा प्रदत्त भौतिक वस्तुओं को तो गिन सकते हैं किंतु दानपर्व पर अपने वनवासी भाई-बहनों की रक्षा हेतु उनके समर्पण को कैसे लिखा जा सकता है? देश और समाज की रक्षा के लिए जिस धरती पर भामाशाह जैसे दानवीरों ने जन्म लिया उनके वंशज परोपकार एवं सेवा के क्षेत्र में कैसे पीछे रह सकते हैं?

जीवन का अभियान, दान बल से अजस्र चलता है।
उतनी बढ़ती ज्योति, स्नेह जितना अनल्प जलता है।■

राम मंदिर अयोध्या और नागा समाज

- जगदम्बा मल्ल, वरिष्ठ लेखक

राम जन्मभूमि मंदिर अयोध्या को हिन्दू-हन्ता मुस्लिम आक्रमणकारी बाबर ने 1528 में ध्वस्त कर दिया तब से लेकर 30 नवम्बर और 1 दिसंबर 1990 को मुलायम सिंह यादव के उत्तर प्रदेश में शासनकाल तक मुसलमानों ने 76 संग्रामों में तीन लाख से अधिक हिन्दूओं की हत्या कर दी किन्तु हमारा मंदिर हमको नहीं दिया। मुलायम सिंह यादव ने 300 कारसेवकों की हत्या कर दी। सरयू नदी का जल रामभक्त कारसेवकों के खून से लाल हो गया। हिन्दू हृदय सम्राट अशोक जी को मार कर घायल कर दिया।

देवपुरुष प्रधानमंत्री श्रद्धेय नरेन्द्र भाई मोदी जी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री आदरणीय योगी आदित्यनाथ जी महाराज के शासन में 22 जनवरी 2024 को वह मंदिर अपने पौराणिक वैभव को प्राप्त हुआ है। यह मन्दिर भारतवर्ष की आत्मा है, हिन्दू राष्ट्र की पहचान है, रामराज्य का प्रतीक है, अधर्म पर धर्म की विजय है, मुस्लिम आततायियों पर हिन्दू पराक्रमियों की विजय है। इस हेतु 3500 करोड़ रुपये हिन्दू समाज के श्रमिक वर्ग से लेकर शीर्षस्थ उद्योगपति, सरकारी अधिकारी और राजनीतिक नेताओं ने दान दिए हैं कांग्रेसियों, कम्युनिष्टों और समाजवादियों ने दान देने से इंकार कर दिया।

मुसलमानों और ईसाईयों ने भी सहयोग राशि नहीं दी। असामान्य उदारवादी और पंथनिरपेक्ष हिन्दुओं को इस तथ्य को ध्यान में रखना चाहिए। मार्च 2024 में संसदीय चुनाव में मतदान करते समय हिन्दू समाज को इसे स्मरण रखना चाहिए। जिन्होंने राम मंदिर का विरोध किया है उनका सामाजिक बहिष्कार होना चाहिए, ये संसद में नहीं पहुंचने चाहिए। राम जन्मभूमि मन्दिर का आन्दोलन पूरे भारतवर्ष और विदेशों में भी चला। इसका प्रभाव मक्का-मदीना, वेटिकन और राष्ट्रसंघ में भी पड़ा। इस प्रभाव की प्रतिध्वनि भारतवर्ष के ईसाई बहुल राज्यों - नागालैंड, मिजोरम, मेघालय, मणिपुर और अरुणाचल प्रदेश पर भी पड़ी। इन राज्यों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम, राष्ट्र सेविका समिति, विद्यार्थी परिषद, विद्या-भारती और विवेकानन्द केंद्र आदि हिन्दू संगठनों के कार्य आपातकाल से पूर्व इसके खत्म होते ही प्रारंभ हो गये हो। नागालैंड में वनवासी कल्याण आश्रम और विवेकानंद केंद्र का कार्य जनवरी 1976 में ही प्रारंभ हो गया था। 6 वर्ष बाद में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, विश्व हिन्दू परिषद्, विद्यार्थी परिषद, भारत विकास परिषद, नेशनल मेडिकोज आर्गेनाइजेशन (NMO), राष्ट्र सेविका समिति, भारतीय मजदूर संघ और भारतीय जनता पार्टी (1986) का भी आगमन हुआ। सबके

सम्मिलित प्रयास के कारण यहाँ के लाखों स्थानीय लोग संघ से जुड़ गए। हिन्दू नागाओं के साथ ईसाई नागा भी हमारे साथ आ गए। कुकी, मिजो, खासी और जयन्तिया समाजों में भी ऐसा ही कार्य हुआ। इसका राजनीतिक लाभ भाजपा को मिला। इस कारण असम और मणिपुर में भाजपा सरकार और अन्य राज्यों में भाजपा समर्थित सरकार बनी है अब चारों तरफ शांति है। 3 मई 2023 से प्रारंभ मणिपुर के दंगे के पीछे चर्च और कांग्रेस का हाथ बताया जाता है।

ईसाई आतंकवाद और अलगाववाद के लिए नागालैंड मशहूर है और चर्च द्वारा प्रचारित किया गया कि 16 मई 1951 के फीजो के जनमत संग्रह में 99.9 प्रतिशत नागाओं ने भारतवर्ष से अलग होने के लिए मतदान किया। यह शत-प्रतिशत झूठ है। नागा पर्वत के ढ़ाई लाख आबादी में से केवल छः हजार लोगों ने कोहिमा और मोकोक्चुंग में नागा आतंकवादियों के भय से मतदान किया। शेष लोगों ने मतदान में भाग ही नहीं लिया। दूसरे दिन आतंकवादी फीजो ने घोषणा किया, '99.9 प्रतिशत नागाओं ने भारतवर्ष से अलग होने के लिए मतदान किया है।' नागा नेशनल काउंसिल (NNC) के संस्थापक सचिव थेईचुथे साखरे ने इसका विरोध किया तो 18 जनवरी 1956 को फीजो ने इनकी हत्या कर दी। 1957 में 99.9 प्रतिशत नागाओं ने फीजो के NNC से अलग होकर नागा पीपुल्स कन्वेंसन (NPC) का गठन किया। डॉ. इम्कांग्लिबा आओ इसके अध्यक्ष बनाये गए। फीजो ने 22 अगस्त 1961 को इनकी हत्या करवा दी। 17 जुलाई 1956 को इस हत्यारे ने थुवोपिसुमी गाँव के 48 हिन्दू चाखेसांग तरुणों की एक साथ हत्या करवा दी। नागा चर्च और चर्च-प्रायोजित नागा आतंकवाद के हितैषी प्रधानमंत्री नेहरू ने कुछ नहीं किया। मुट्ठी भर आतंकवादियों ने चर्च की मदद से पूरे नागा समाज को भारत विरोधी प्रचारित किया, इनके खिलाफ जिसने मुँह खोला उनको मार डाला। पद्म विभूषण डॉ. एस सी जमीर (90) पर आतंकवादियों ने चार बार आक्रमण किये किन्तु वे बच गए।

नागालैंड में वनवासी कल्याण आश्रम का कार्य जनवरी 1976 में आपातकाल के समय ही शुरू हो गया था। रानी गाइदिन्ल्यू, एन.सी. जेलियांग, रामकुईवांग्बे न्यूमे और जलियांगरांग हरक्का संगठन और कुछ अंगामी गावों से संपर्क हो गया था। तबसे यह कार्य शुरू हुआ और इसने आज तक की यात्रा तय की है तो इसका नागा समाज पर प्रभाव पड़ना ही था। 'एकला चलो' - कल्याण आश्रम ने ऐसा नहीं किया। कल्याण आश्रम के प्रारंभिक कार्यकर्ताओं ने संघ की पांच शक्तिशाली शाखाएं खड़ी की। विश्व हिन्दू परिषद, भारत विकास परिषद, राष्ट्र सेविका समिति, विद्यार्थी परिषद, भारतीय मजदूर संघ, नेशनल मेडिकोस आर्गेनाइजेशन (NMO) और भारतीय जनता पार्टी के प्रांतीय इकाई के गठन में अग्रणी भूमिका निभाई। सबके संयुक्त प्रयास से लाखों नागा युवक संघ से जुड़े और मई 2014 में केंद्र में मोदी सरकार बनने पर नागा मानस में राष्ट्रवादी परिवर्तन हुआ। हम लोगों ने भी इनको तथ्य का आभास कराया, कश्मीर का उदहारण दिखाया। मैंने सैकड़ों लेख लिखे। रानी गाइदिन्ल्यू और हेपाउ जादोनांग पर पुस्तकें लिखीं, विचार-गोष्ठियां आयोजित की गईं। इस कारण सकारात्मक परिवेश बना और अब ये सोचने लगे हैं- अब गोली चली तो हम लोग कूट

दिए जायेंगें। 2007 आते-आते नागालैंड के 12 नागा जनजातियों, दिमासा/कछारी, बगल के चाय-बगान श्रमिक और कारबी समाज में प्रभावी कार्य खड़ा हो चुका था। लाखों नागा और हिन्दू-इसाई दोनों हमसे जुड़ गए। हमारे टेनिंग में दो शाखा (ध्वज-युक्त) और डिमापुर में पांच ध्वज-युक्त शाखाएँ नियमित लगने लगीं। दर्जनों नागा युवक संघ प्रशिक्षित हो गए।

आतंकवादियों के भी बच्चों को देश के दो दर्जन छात्रावासों में पढ़ा कर तैयार किया गया। लगभग 500 नागा छात्र/छात्राएं कल्याण आश्रम और संघ के छात्रावासों में पढ़ कर नागालैंड में सरकारी पदों पर भी कार्य कर रहे हैं।

इसका प्रभाव पड़ा। नागालैंड में भाजपा शासन कर रही है। संघ प्रचारक ला गणेशन जी (केरल निवासी) नागालैंड के राजभवन में हैं। NSCN&IM के धर्म-पिता कहे जाने वाले मुख्यमंत्री नीफू रियो संघ के संरक्षक की भूमिका में है। उनके मंत्रिमंडल के सभी मंत्री संघ प्रशंसक और भाजपा के कार्यकर्ता बन गए हैं। नागा समस्या का पूर्ण समाधान मोदी जी के हाथ में है। 'NSCN&IM प्रमुख मुइवा (90) कब मरेगा।' नागा समाज इसका इन्तजार कर रहा है।

ऐसे परिवेश में श्रीराम जन्मभूमि मंदिर अयोध्या के लिए रामभक्त जब मुख्यमंत्री नीफू रियो के पास गये तो उन्होंने 20 लाख रुपये से बोहनी की। उनके मंत्रिमंडल के उप-मुख्यमंत्री वाई पैटन 11 लाख, टी आर जेलियांग 5 लाख, उच्च तकनीकी शिक्षामंत्री इम्ना एलांग लांगकुमर 11 लाख और भाजपा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एम. चुबा आओ ने 25 हजार रुपए का अनुदान दिया। इस प्रकार नागा हिन्दू और नागा ईसाई बंधुओं ने 60 लाख से अधिक अनुदान दिया। वर्ष 2005 से पूर्व यह अकल्पनीय था। किन्तु समय ने करवट ली और नागा समाज भी बदल रहा है। यहाँ अब तीन नाम लिए जाते हैं - दिल्ली में मोदी जी, उत्तर प्रदेश में योगी जी और असम में हेमंत बिश्वशर्मा जी। 'योगी जी जैसा मुख्यमंत्री नागालैंड में भी चाहिए तब जाकर आतंकवाद खतम होगा, तभी शांति आयेगी और तभी चतुर्दिक विकास होगा, बेटी-बहनें सुरक्षित हो पाएंगीं।' नागा लोग भगवान से ऐसी प्रार्थना करते हैं।

बदले में हिन्दू समाज ने भी नागा समाज के भले के लिए सब कुछ किया है। उनके अपराधों को माफ किया है, इनके विकास के लिए अकूत धन दिया है और 20 जनवरी 2024 को अयोध्या धाम में आयोजित राम जन्मभूमि मंदिर के उद्घाटन कार्यक्रम नागाओं को भी आमंत्रित किया गया। जेलियांगरांग समाज से रामकुईवांग्बे न्यूमे (लोदी ग्राम), थुन्बुई जलियांग (न्जाओ ग्राम), अंगामी समाज से विश्वेमा निवासी योसे छाया और दिमासा समाज से श्रीमती विनीता जिग्दुंग (धनसिरीपार ग्राम) ने उद्घाटन कार्यक्रम में भाग लिया। इस आयोजन से नागा समाज और दिमासा समाज का वृहत्तर हिन्दू समाज के साथ जो पौराणिक सम्बन्ध रहा है जिसे साम्यवादी लेखकों ने इतिहास से लुप्त कर दिया था वह उजागर होकर राष्ट्र के सम्मुख प्रस्तुत हुआ है। अज्ञातवास की अवधि में माता कुंती के साथ पाँचों पांडव नागा हिल्स पधारे। महाबली भीम ने हिडिम्बा नामक दिमासा बालिका से विवाह किया जिससे घटोत्कच पैदा हुए। घटोत्कच से बर्बरीक, अन्जनपर्वन और मेघवर्ण हुए।

इन सबने महाभारत संग्राम में भाग लिया। नागा कन्या उलूपी से अर्जुन ने विवाह किया जिनसे इरावन पैदा हुए। कृष्ण भगवान के नाती अनिरुद्ध ने नागा बालिका ऊषा से विवाह किया जिनसे मृगकेतन पैदा हुए। ऊषा के नाम पर नागालैंड के वोखा (Wokha) नगर का नाम पड़ा। यहाँ से आगे बढ़ कर जब पाण्डव बन्धु मणिपुर पहुंचे तो अर्जुन ने चित्रांगदा नामक सुन्दरी से विवाह किया जिनसे बभ्रुवाहन पैदा हुए। ये सारी गाथाएं पुराने साहित्य में और लोक कथाओं में वर्णित हैं किन्तु अंग्रेजों के शासनकाल में इन्हें लुप्त करने का प्रयास किया गया। श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर आन्दोलन ने इन्हें उजागर कर दिया और इनको गर्भनाल से जोड़ दिया।■

वनवासी कल्याण आश्रम के छात्र का सैनिक स्कूल में चयन

महर्षि वाल्मीकि वनवासी कल्याण आश्रम, सीताबाड़ी, जिला बारां के छात्र संजय भील ने सैनिक स्कूल प्रवेश परीक्षा में शानदार प्रदर्शन करते हुए ऑल इंडिया रैंक 3097 हासिल किया है।

जनजाति समाज द्वारा निर्मित रामलला की पालकी अयोध्या पहुंची

अयोध्या में रामलला की प्राणप्रतिष्ठा हो चुकी है। अब वहाँ पर चल रही कई धार्मिक गतिविधियों में से एक है मंडलोत्सव।

यह मंडलोत्सव प्राणप्रतिष्ठा के दूसरे दिन यानि 23 जनवरी से अगले 48 दिनों तक श्री विश्वप्रसन्नतीर्थ स्वामी (पेजावर मठ) रामजन्मभूमि तीर्थ ट्रस्टी के निर्देशन में मनाया जा रहा है। इसके दौरान रामलला की चांदी की मूति को पालकी में बैठाकर शाम चार बजे मंदिर की परिक्रमा कराई जाती है।

खास बात यह है कि रामलला की इस पालकी के माध्यम से सेवा में सम्मिलित होने का सुनहरा अवसर कर्नाटक के जनजाति समाज को प्राप्त हुआ। श्री पेजावर तीर्थ के पूज्य स्वामीजी के निर्देशानुसार कर्नाटक के रामनगरम की इरुलिगा जनजाति तथा उत्तर कन्नड जिले की हालक्की जनजातियों ने मंडलोत्सव के लिए पालकियाँ बनाई।

वनवासी कल्याण आश्रम के कार्यकर्ता श्री केशव मराठी एवं श्री विनायक मराठी दो पालकियाँ लेकर अयोध्या पहुँचे। उन्होंने यह लंबी यात्रा बिना कहीं रुके केवल दो दिन में ही पूरी की। 19 फरवरी की शाम हुए उत्सव में रामलला जनजाति समाज द्वारा निर्मित पालकी में विराजमान हुए। कल्याण आश्रम के कार्यकर्ताओं को भी इस सेवा में प्रत्यक्ष सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।■

नव निर्मित बागमुण्डी छात्रावास का शुभोद्घाटन

- विवेक चिरानिया, सह संगठन मंत्री, कोलकाता महानगर

पश्चिम बंगाल के बागमुण्डी में पूर्वांचल कल्याण आश्रम द्वारा पुनर्निर्मित छात्रावास का शुभोद्घाटन वसंत पंचमी के पावन अवसर पर 14 फ़रवरी 2024 को पद्मश्री गुरुमाँ कमली सोरेन के करकमलों द्वारा संपन्न हुआ।

बालकों के इस छात्रावास में सुचारु रूप से अध्ययन का ध्यान रखते हुए वैदिक संस्कारों का प्रशिक्षण दिया जाता है। यहाँ की देखरेख श्री उत्तम महतो, राज दा, दिलीप दा आदि पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं द्वारा की जाती है। हमारे देश के भावी नागरिक उज्जवल भविष्य के साथ आगे बढ़ें यही उद्देश्य रहता है।

सर्वप्रथम कलश यात्रा कर सरस्वती माँ का पूजन एवं यज्ञ संपन्न हुआ। दोपहर में छात्रावास के छात्रों तथा निवेदिता छात्रावास (पुरुलिया) की छात्राओं द्वारा मनमोहक नृत्य एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गए। संध्या समय पुरुलिया क्षेत्र के सुप्रसिद्ध छऊ नृत्य की प्रस्तुति की गयी जिसका आनंद सभी आगंतुकों तथा ग्रामवासियों ने लिया।

उद्घाटन समारोह में कोलकाता-हावड़ा महानगर से लगभग पचास कार्यकर्ता उपस्थित थे। पद्मश्री गुरुमाँ कमली सोरेन, पद्मश्री दुखुमाझी (गाछ बाबा) तथा डॉ चुनाराम मुर्मू विशिष्ट अतिथि के रूप में कार्यक्रम में उपस्थित थे। इनके अतिरिक्त कई वरिष्ठ कार्यकर्ता तथा गणमान्य व्यक्ति भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

बागमुण्डी छात्रावास का नाम अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के प्रथम प्रणेता श्री वसंतराव जी भट्ट के नाम पर रखा गया है। उनकी प्रेरणा से सूक्ष्म रूप से निर्मित यह छात्रावास अब वृहदाकार हो गया है। कई औद्योगिक समूहों तथा कार्यकर्ताओं ने इस छात्रावास के पुनर्निर्माण में बढ़ चढ़ कर सहयोग किया है।■

जनजातीय समाज में होली का उत्सव

- सत्येन्द्र सिंह, अध्यक्ष, अ.भा.व.क.आश्रम

वनों और पहाड़ों पर रंग-बिरंगे फूलों एवं कोमल-कोमल पत्तों से सुसज्जित वातावरण में होली, जनजातीय परम्परा में एक महत्वपूर्ण पर्व है। जो फाल्गुन पूर्णिमा में होलिका दहन या फगुआ जलाकर किया जाता है। जनजाति समाज में यह पर्व ढोल, नगाड़े, मांदर आदि वाद्ययंत्रों के बिना अधूरा है। होली को होरी और फागुआ भी कहते हैं। यह जनजातीय संस्कृति में प्रकृति की पूजा एवं उनके प्रति आभार व्यक्त करने का त्योहार है। होली में सेमल, चिटचिटा, चटकाही रेंडी के लकड़ियों के महत्व से संबंधित होरी गीत बड़े चाव के साथ गाने की परम्परा है। इस त्योहार की तैयारी पंद्रह दिन पहले से ही शुरू हो जाती है। होली पर्व पर होलिका और प्रह्लाद, शिवजी और कामदेव और राजा रघु से जुड़ी मान्यताएं और कथाएं तो हैं ही, जनजातीय मान्यताओं में एक कथा है कि प्राचीन काल में जब जनजातीय समाज शिकार पर जाते थे, उस वक्त शिकार के दौरान सेमल के पेड़ पर बड़ा सांप मिला। साँप अपनी श्वास से ही जानवरों और लोगों को खींच कर खा जाता था। सभी ने इसे मारने की योजना बनाई। इसी क्रम में एक महिला के सुझाव पर धधकती आग को लेकर उस रास्ते से गुजरने का निर्णय लिया गया। जैसे ही महिला आग को माथे पर लेकर रास्ते से गुजरने लगी तो उस सांप ने उसे अपनी ओर खींच लिया। साँप आग और राख से अंधा हो गया। इसके बाद साँप को मार दिया गया। साँप सेमल के पेड़ पर ही रहता था इसलिए आज भी सेमल को ही ज्यादातर फाग खूंटा के रूप में लाकर घास, पुआल से जलाते हैं।

दूसरी कथानुसार प्राचीन समय में सारु नामक विशाल पर्वत था। उस पर्वत पर बड़ा सेमल का पेड़ था। उसमें राक्षसी रुपी दो गिद्धों का निवास था।वे दोनों, लोगों और जानवरों के बच्चों को अपना आहार बना लेते थे। समाज के लोग जान बचाने के लिए भगवान महादेव से विनती करने पहुंचे। महादेव ने दोनों गिद्धों को मारने के लिए लोहार से बारह मन लोहे का धनुष और नौ मन का तीर बनाने के लिए कहा। ठीक फाल्गुन पूर्णिमा के दिन एक मचान बनाकर भगवान महादेव बैठ गए और चाँदनी रात में दोनों गिद्धों को उसी तीर-धनुष से मार डाला, यहां भी सेमल का ही पेड़ था।

जनजाति समाज में होली के बाद शिकार खेलने की परम्परा है और कुछ जनजातियों में होली के एक-दो दिन पूर्व ही शिकार खेलते हैं। अब तो वन्य जीवों की सुरक्षा का प्रण लिया जाने लगा है। जनजाति समाज में फागुआ काटने की परम्परा वर्षों पुरानी है। फाल्गुन पूर्णिमा की रात शुभ मुहूर्त में गांव के पाहन की ओर से सेमल या एरंड की डालियों पर घास, पुआल लपेट कर जलाया जाता है। जलती हुई डालियों को धारदार हथियारों से काटते हैं। नये फसल चना, गेहूं आदि को उसी आग में सेंककर खाते हैं जिससे वर्ष भर स्वस्थ रहें, ऐसी परम्परा है। नीम के पत्ते को सेंककर और उसे पीसकर शरबत

भी पीते हैं और कामना करते हें कि साल भर निरोग रहें। जनजाति समाज के लोग घर-घर अपने इष्टदेव, कुलदेव की पूजा करते हैं। उनको अबीर, गुलाल चढ़ाते हैं। कहीं बलि भी देते हैं। आपस मे रंग, अबीर गुलाल से होली खेलते हैं, धूल उड़ाते हैं और सामूहिक नृत्य करते हैं। मिष्ठान्न भोजन करते हैं एक दूसरे को शुभकामनाएँ देते हैं। फाग जलने से उठने वाले धुएँ की दिशा देखकर पाहन और बड़े बुजुर्ग ये बता देते हैं कि इस साल मानसून में बारिश कैसी होगी? कुछ जनजातियों में होलिका दहन स्थान की अग्नि को अपने घर ले जाकर उसी से घर का चूल्हा जलाकर पकवान बनाते हैं। बहुत सी जनजाति समाज में होलिका दहन स्थल की राख को पांच लोग लेकर ग्राम देवता, महादेव-पार्वती को लगाते हैं। एक दूसरे को राख का टीका लगाकर अभिनंदन करते हैं। जनजातीय समाज में नई-नई ब्याही हुई बेटियां होली खेलने अपने पति के साथ मायके आती हैं। कुछ जनजातियों में इस दिन पाहन पुजारी बदलने की परम्परा है। नियमत: बांस से बने सूप में ग्राम देवता का आह्वान किया जाता है और सूप में हरकत होती है। इसी क्रम में चयन पूरा होता है। थारु जनजाति समाज में जिंदा और मरी होली खेलने की परम्परा है। होलिका दहन से पहले जिंदा और बाद में मरी होली खेली जाती है। गोंड, कंवर, उरांव आदि अनेकों जनजाति समाज में भगवान श्रीराम, माता सीता और लक्ष्मण से संबंधित मनमोहक होली गीत गाए जाते हैं। होली हमें बुराई पर अच्छाई की जीत के साथ यह भी संदेश देती है कि व्यक्तिगत, पारिवारिक और समाजिक जीवन में काम (मोह, इच्छा, लालच, धन, मद आदि) को घरों में हावी न होने दें।■

धूमधाम से मनाया रामनवमी उत्सव

- संगीता जायसवाल, संयोजिका, गोवा बागान समिति

राम हमारी प्राणात्मा है। कोलकाता-हावड़ा महानगर की सभी समितियां अपने वार्षिकोत्सव के रूप में उत्साहपूर्वक इस उत्सव को मनाती हैं।

गोवा बागान महिला समिति ने 2 अप्रैल को स्थानीय जायसवाल विद्या भवन में रामनवमी उत्सव का आयोजन किया। प्रमुख वक्ता अखिल भारतीय कोषाध्यक्ष माननीय महेश जी मोदी ने राम जी एवं हनुमान जी के जीवन के बारे में विस्तृत रूप से व्याख्या की। रामजी शहरवासी थे एवं हनुमान जी वनवासी थे। राम जी चाहते तो अयोध्या एवं जनकपुर से सेना बुलाकर रावण को पराजित कर सकते थे परंतु उन्होंने वनवासियों को ही एकत्र कर उनके ही सहयोग से रावण जैसे योद्धा पर विजय प्राप्त की। श्रीमती मधु सिंह ने कार्यक्रम का संचालन किया शबरी एवं राम लक्ष्मण की नाटिका का मंचन बहुत सुंदर था। 'मेरे घर राम आए हैं' इस गीत की प्रस्तुति नृत्य द्वारा श्रीमती सरिता जायसवाल ने की। हमारे कार्यकर्ता संजय गोयल ने भी वनवासी के बारे में विचार व्यक्त किये। पाठशाला के प्रधान अध्यापक चिन्मय विश्वास ने हमारे कार्य एवं कार्यकर्ताओं की भूरी भूरी प्रशंसा की।

राम मंदिर समिति द्वारा भव्य रूप से सुंदरकांड का पाठ आयोजित किया गया। मुख्य वक्ता पूर्वांचल कल्याण आश्रम की अध्यक्षा श्रीमती शकुंतला जी बागड़ी ने वनवासी समाज तथा हमारे दायित्व एवं कार्यों पर प्रकाश डाला। लेक टाउन समिति के कार्यकर्ता रामनवमी उत्सव उद्यापन समिति के तत्वावधान में विशाल शोभयात्रा में सम्मिलित हुए जो दमदम बालाजी मंदिर से प्रारंभ होकर बाल हनुमान मंदिर लोकटाउन पहुंची। अन्य सभी समितियों ने भी रामनवमी कार्यक्रम खूब हर्ष एवं उल्लास से मनाया।■

हावड़ा महानगर की गतिविधियाँ

- कुसुम सरावगी, हावड़ा महानगर महिला प्रमुख

होली मिलन कार्यक्रम

रंगोत्सव या होली का पर्व हर्ष और उल्लास के साथ सभी कार्यकर्ताओं को अनूठे ढंग से जीवंत कर देता है। उत्तर हावड़ा, विष्णु वाटिका महिला, भक्त मंडल महिला समिति द्वारा कांकरिया सदन सलकिया में होली प्रीति सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें 50 बहनों ने अति उत्साह पूर्वक भाग लिया। गीतों की मनमोहक प्रस्तुतियों ने कार्यकर्ताओं को नवीन ऊर्जा और उत्साह से सराबोर कर दिया।

राणी सती दादी का मंगल

6 जनवरी को हावड़ा महानगर के महिला समितियों द्वारा भक्ति पूर्वक हनुमान भक्त मण्डल के हॉल में दादी का मंगल आयोजित किया गया जिसमें 150 महिलाओं नें सहभागिता की।■

नई सोच नई पहल

- शशि मोदी, सह मंत्री, कोलकाता महानगर

मेरे दोनों पोतों सोहम कृष्ण और गौरांग वासु को उनके जन्मदिन पर बनवासी भाई बहनों से मिलवाएंगे और उनके साथ ही जन्मदिन मनाएंगे, ऐसा मेरे पुत्र प्रतीक और पुत्रवधू ऋचा ने मन में तय कर लिया था। हमारे संगठन मंत्री माननीय उत्तम दा ने सारी व्यवस्था कर दी। हमारा पूरा परिवार टेंपो ट्रैवलर से दक्षिण बंगाल के चूँचुड़ा जिला अंतर्गत मुड़ि गुड़िया गांव पहुंचे। पूरा गांव स्वागत को आतुर था। नगाड़े बजाते-नाचते गाते हुए हम सभी को शिशु शिक्षा केंद्र तक ले गए। इस केंद्र पर 38 बालक-बालिकाएं दो आचार्यों के द्वारा शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। मेरे दोनों पोते एवं पूरा परिवार तुरंत ही बच्चों से घुल मिल गया। गाँव की मिट्टी में खेलना, खेतों की पगडंडियों पर चलना अलग ही आनंद दे रहा था। हम सभी जन ग्रामवासियों के घर भी गए। हम दोनों ही आंतरिक आनंद का अनुभव कर रहे थे। 'तू मैं एक रक्त' का भाव सही अर्थों में चरितार्थ हो रहा था। मेरा आग्रह है कि हम ऐसे ही किसी भी कार्यक्रम को आधार बनाकर अपने परिवार के किसी भी मंगल प्रसंग पर गाँव अवश्य जाएँ और वनवासी भाई बहनों और बच्चों से मिलकर जीवन को धन्य करें।

इस प्रकार के आयोजन अपने सीमित अस्तित्व का अतिक्रमण करते हुए लघु से विराट की ओर आगे बढ़ने का आह्वान करते हैं।■

स्वालंबन की ओर एक और कदम

- तारा माहेश्वरी, गोवाबागान समिति

स्वाभिमान जब जगता है,
तो आत्म- अवलंबन आता है।
परिवर्तन के अनुक्रम का,
संग स्वावलंबन पा जाता है।

'स्वावलंबन' शब्द का अर्थ : आत्मनिर्भरता (स्वावलंबन) अन्य लोगों की सहायता की आवश्यकता के बिना, स्वयं कार्य करने और निर्णय लेने की क्षमता है।आज के युग में उसी का जीवन सार्थक है जो स्वावलंबी है, क्योंकि स्वावलंबन ही जीवन का मूलमंत्र है। देश में रोजगार और स्वरोजगार के अवसर पैदा करने हेतु ठोस कदम उठाने के लिए एक महत्वपूर्ण सामूहिक पहल है, जिसे आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में काम कर रहे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के आठ संगठनों द्वारा प्रारम्भ किया गया है। भले ही भारत को आज विश्व का सबसे युवा राष्ट्र माना जाता है, लेकिन इसके बावजूद भारत के आर्थिक विकास के लिए बेरोजगारी सबसे बड़ी चुनौती है।इसी चुनौती से निपटने के लिए कल्याण आश्रम परिवार की सिलाई प्रशिक्षण योजना अपने आप में एक अभूतपूर्व कदम है।भारत को जगतगुरु बनाना है तो हर व्यक्ति के हाथ में काम होगा हर व्यक्ति को कुछ क्रियात्मक करने के लिए प्रेरित करना होगा तभी देश आगे बढ़ सकेगा। इसी लक्ष्य के साथ कल्याण आश्रम ने गांव की वनवासी बहनों को सिलाई प्रशिक्षण में आने के लिए प्रेरित किया।

2013 में शुरू किए गए इस कार्य में दिन पर दिन बढ़ोतरी हो रही है। अभी तक 1200 बहनें सीख कर कुछ कार्य करने की प्रेरणा लेकर यहां से गई हैं। उच्च शिक्षा एम.ए. और बी.ए. पढ़कर भी कार्य न मिलने के कारण सिलाई की ओर प्रभावित होती हैं जिससे कुछ ना कुछ कमा सके।

इस वर्ष मार्च मास में सिलाई प्रशिक्षण के लिए वनवासी क्षेत्रों से बत्तीस महिलाएँ एवं बालिकाएँ आईं। मन में बहुत उत्साह तथा चेहरों पर सीखने की ललक स्पष्ट झलक रही थी। बड़ी तन्मयता और पूरी लगन के साथ महिलाओं और बालिकाओं ने सिलाई प्रशिक्षण प्राप्त किया। श्रीमती विद्याजी खेमका एवं किरण जी मंत्री कई सालों से इस कार्य को बहुत आत्मीयता से संभाल रही हैं। इसी दौरान एक बालिका को बुखार आ गया। वह तो ग्राम में अपनी माँ के पास जाने का आग्रह करने लगी और रोने लग गई। यह देखकर ममतामयी विद्या जी ने उसे गले लगा कर सांत्वना दी और डॉक्टर को दिखाकर संपूर्ण रूप से देखभाल की। उनका कहा हुआ वाक्य- 'अरी बिटिया! मैं भी तुम्हारी माँ ही हूँ, मैं तुम्हारी हूँ तुम मेरी हो' यह सुनकर मानों उसमें नव जीवन का संचार हो गया। स्वस्थ होकर तल्लीनता से सीखने लगी और और

पूरा कोर्स कर के गदगद भाव से सुखद यादें लेकर घर गई।

सिलाई सीखी हुई लड़कियों में से कुछ लड़कियों ने सिलाई केंद्र खोले हैं। इस तरह कल्याण आश्रम के 10 सिलाई केंद्र चल रहे हैं। कुमारी, बांधवान, राऊ तोड़ा, बलरामपुर, बागमुंडी, अयोध्या पहाड़, दक्षिण 24 परगना, खेसारी, बर्दवान, सागरदीघी और कोलकाता में यह कार्य सुचारू रुप से हो रहा है।

इनमें सिखाने वाली सभी महिलाएँ कल्याण भवन कोलकाता से सीखकर गई हैं और अन्य वनवासी महिलाएं कुछ ना कुछ काम गांव में कर रही हैं। कुछ ने अपनी दुकान भी खोली है और 15,000 से 20,000 तक महीने में कमा लेती हैं।

सिलाई प्रशिक्षण के साथ-साथ जैविक खेती का भी प्रशिक्षण दिया गया। बहनें स्वावलंबी बनकर आगे बढ़ें इस हेतु उन्हें 9 सिलाई मशीनें भी प्रदान की गईं। सिलाई प्रशिक्षण के उपरांत सभी बहनें सुखद यादों के साथ अपने-अपने गाँव लौट गईं। सभी कल्याण आश्रम परिवार की कार्यकर्ता बहनें इस कार्य को बड़ी ही आत्मीयता और समर्पण के साथ सँभालती हैं। प्रशिक्षु बहनों की देखभाल और उनके स्वास्थ्य का पूरा दायित्व कार्यकर्ता बहनों का ही रहता है।■

सरकार द्वारा वनवासियों का सम्मान

अपने समाज में कई ऐसी विभूतियाँ हुई हैं जिनके नामों के उल्लेख के बिना देश का इतिहास अधूरा है। समाज को अपने पुरखों पर गर्व होना चाहिए। पद्म क्रांति के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि पद्म पुरस्कार 1954 में प्रारंभ किए गए थे। तब से वर्ष 2023 तक कुल 48 भारत रत्न, 331 पद्म विभूषण 1303 पद्म भूषण, 3421 पद्मश्री पुरष्कार प्रदान किए जा चुके हैं। संकलित आँकड़ों के अनुसार जनजाति विभूतियों को 100 पदक प्रदान किए गए हैं। वर्ष 1954 से लेकर 2014 तक 61 वर्षों में आदिवासी भाई-बहनों को महज 38 पदक प्रदान किए गए। जबकि यशस्वी प्रधानमंत्री मोदी जी की सरकार के कार्यकाल में वर्ष 2015 से 2023 के दौरान केवल 9 वर्षों में 62 आदिवासियों को पद्म पुरस्कारों से अलंकृत किया गया है।

जिसमें तीजनबाई और श्रीमती एम. सी मैरी कॉम को तो तीनों पुरस्कार पद्मश्री, पद्मभूषण और पद्म विभूषण दिये गये हैं।■

अमृत वचन

प्रत्येक कर्म के साथ धर्म को जोड़ दिया जाए तो धर्म के लिए अलग से समय निकालने की आवश्यकता ही नहीं।

- आचार्य महाश्रमण

शोक संवाद

श्री शिव कुमार कौल का निधन

- कृपा प्रसाद सिंह, पूर्व उपाध्यक्ष, अ.भा.व.क.आश्रम

श्री एस. के. कौल (शिव कुमार कौल) का देहावसान 98 वर्ष के उम्र में 26.03.2024 को 11 बजे उनके आवास ग्रेटर कैलाश फेस 2, नई दिल्ली में हो गया। उनके पुत्र संजीव कौल ने उनके पार्थिव शरीर को श्मशान घाट में मुखाग्नि दी। पौत्र सागर कौल भी इस समय उपस्थित रहे।

श्री शिवकुमार कौल केंद्रीय सचिवालय से जनजातीय विकास आयुक्त के पद से 1982 में अवकाश प्राप्त किया। 1981 में दिल्ली में आयोजित अ.भा. कार्यकर्ता सम्मेलन में आप कल्याण आश्रम के प्रथम संगठन मंत्री श्री राम भाऊ गोडबोले के संपर्क में आए। उनके साथ Dr S N Rath, एवं श्री गुलाटी जी भी सम्पर्क में आए।

सूर्य निकेतन, मोटा रंधा, दादरा नगर हवेली के शिलान्यास कार्यक्रम में तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. ज्ञानी जैल सिंह के साथ भाग लिया। उस समय श्री तरुण विजय जी वहाँ के संगठनात्मक कार्य को देखते थे। बाद में तरुण विजय जी को पांचजन्य के संपादन का कार्य दिया गया।

श्री एस के कौल 1983 के बाद केंद्रीय टोली में सक्रिय हुए। बाद में वनवासी कल्याण आश्रम, दिल्ली के अध्यक्ष पद का दायित्व संभाला। 1981 में वनबंधु का काम बलदेव मल्होत्रा 2/7 अंसारी रोड, दिल्ली से करते थे। बाद में कौल साहब के जिम्मे वनबंधु का काम श्री जयभगवान शर्मा गाजियाबाद के साथ आया।

अपने जीवन के अंतिम समय तक वनबंधु के साथ संपादक एवं सलाहकार के रूप में जुड़े रहे।

अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में कौल साहब SC & ST Commission, Govt of India के सदस्य नियुक्त हुए, उस समय श्री दिलीप सिंह भूरिया इस आयोग के अध्यक्ष नियुक्त हुए थे। इस आयोग के माध्यम से केरल,अंडमान द्वीप समूह, असम एवं मिजोरम के जनजातीय समूह के हित में कार्य किया, कई लोगों को जनजातीय सूची में जुड़वाया।

2001 के ट्राइब एवं ट्राइबल प्रोडक्ट्स के नाम से आयोजित वनवासी मेले के आयोजन, जवाहर लाल नेहरू स्टेडियम, दिल्ली में संयोजक के नाते कार्य किया। मेले में थीम पेवेलियन के निर्माण में अहम भूमिका निभाई। यह मेला मिनिस्ट्री ऑफ ट्राइबल अफेयर्स के ट्राइफेड के आर्थिक सहयोग से CBMD एवं ABVKA ने सात दिवसीय मेले का सफल आयोजन किया। मा. जगदेव राम जी, डा. प्रसन्न सप्रे, कृपा प्रसाद सिंह, जनार्दन सिंह, संतोष प्रांजपे, शिव भगवान अग्रवाल, शांति स्वरूप, संजीव कौल आदि मेले के आयोजन में वैभव दांगे, एड अनिल गचके एवं CBMD के साथ लगे। इस सफल मेले के आयोजन में 701 कारीगरों ने भाग लिया। Tribe &Tribal products के नाम से आयोजित सेमिनार के convenor के नाते श्री कौल साहब ने कार्य किया। अनुभवी समाजसेवियों के द्वारा 40 पेपर का पाठन हुआ। सरदार भूपेंद्र सिंह एवं बस्तर से श्री शर्मा IAS, तरुण विजय, संपाठक, पांचजन्य, Dr P Sapte, महामंत्री, कल्याण आश्रम ने भी सेमिनार में पेपर प्रस्तुत किए।■

अनुकरणीय

वनजीवन के संस्कारों का प्रतिफल

- संजय रस्तोगी, मंत्री, द.बंगाल प्रान्त

प्रेरणा देता है आपका आत्मिक बल,
पाया है सदा आपको सरल और निश्छल।
आपका जीवन दर्शन देता है अमूल्य संदेशा,
आप हम सबकी आदर्श हैं और रहेंगी हमेशा।

वनवासी कल्याण आश्रम का कार्य ईश्वरीय कार्य है - यही हम सब बोलते हैं और यही असंख्यों बार कार्य करते हुए अनुभव होता है। कार्यकर्ताओं में ऊर्जा,

स्फूर्ति, आत्मबल का संयोजन करने में अनुकरणीय व्यक्तित्वों की भी बड़ी भूमिका होती है। कार्यकर्ता स्थापित आदर्शों को अपनी पूँजी मानते हैं। आदर्श व्यक्तित्वो के प्रकाश स्तम्भ कार्यकर्ताओं के निर्माण में अपनी बड़ी भूमिका निभाते हैं।

अपना बागमुण्डी छात्रावास बन कर तैयार हो गया है। उसका पूजन कार्यक्रम 14 फ़रवरी बसंत पंचमी के दिन हुआ। अभी तक बागमुण्डी छात्रावास के दूसरे तल्ले के एक हिस्से के निर्माण के लिए कोई सहयोगी नहीं मिला था। सुनीता-पूजा केडिया ने 21 लाख की राशि प्रदान कर उस हिस्से की सहयोगी बन गई हैं। यह अत्यन्त हर्ष की बात भी है कि उद्घाटन के पहले ही इसकी स्वीकृति मिल गई। ध्यातव्य है कि पूजा विवाह से पूर्व 7 बार वन जीवन में जा चुकी हैं। वनजीवन अपने संस्कार निर्माण के अभूतपूर्व प्रकल्पों में एक है।

बिजनेस नेटवर्क इंटरनेशनल द्वारा सहयोग

हमारे पूर्णकालीन कार्यकर्ता वनवासी क्षेत्रों एवं ग्रामों में संपर्क कर शिक्षा एवं संस्कारों की अलग जागते रहते हैं अक्सर भ्रमण करते रहते हैं। इन क्षेत्रों में लगभग 400 स्थानों पर एकल विद्यालय का कार्य हो रहा है बालकों को शिक्षा देने का कार्य योजना अंतर्गत कार्यकर्ता कर रहे हैं। इस बार बिजनेस नेटवर्क इंटरनेशनल द्वारा तीस आधुनिक सुविधा से युक्त साइकिलें पूर्वांचल कल्याण आश्रम को प्रदान की गई। हावड़ा महानगर के अध्यक्ष माननीय श्री शंकरलाल जी हाकिम के कर कमलों से उन्हें सम्मान पत्र प्रदान किया गया। हमारे कार्यकर्ताओं के लिए यह उपयोगी उपहार पाकर हम अनुगृहीत हैं। साधुवाद! ■

बोधकथा

पैसों की तंगी

एक गरीब औरत एक साधु के पास गई और कातर स्वर में बोली, 'स्वामी जी! कोई ऐसा पवित्र मन्त्र लिख दीजिये जिससे मेरे बच्चों का रात को भूख से रोना बन्द हो जाये...।' साधु ने कुछ पल एकटक आकाश की ओर देखा फिर अपनी कुटिया में अन्दर गया और एक पीले कपड़े पर एक मन्त्र लिखकर उसे ताबीज की तरह लपेट-बाँधकर उस महिला को दे दिया। साधु ने कहा, इस मन्त्र को घर में उस जगह रखना, जहाँ नेक कमाई का धन रखती हो। महिला खुश होकर चली गई। ईश्वर कृपा से उसके पति की आमदनी ठीक हुई और बच्चों को भोजन मिल गया। रात शान्ति से कट गई। अगले रोज़ भोर में ही उन्हें पैसों से भरी एक थैली घर के आँगन में मिली। थैली में धन के अलावा एक पर्चा भी निकला, जिस पर लिखा था, कोई कारोबार कर लें...। इस बात पर अमल करते हुए उस औरत के पति ने एक छोटी सी दुकान किराए पर ले ली और काम शुरू किया। धीरे धीरे कारोबार बढ़ा, तो दुकानें भी बढ़ती गईं...। जैसे पैसों की बारिश सी होने लगी...। पति की कमाई तिजोरी में रखते समय एक दिन उस महिला की नज़र उस मन्त्र लिखे कपड़े पर पड़ी...। 'साधु महाराज ने ऐसा कौन सा मन्त्र लिखा था कि हमारी सारी गरीबी दूर हो गई?' सोचते सोचते उसने वह मन्त्र वाला कपड़ा खोल डाला...।

लिखा था कि : जब पैसों की तंगी ख़त्म हो जाये, तो सारा पैसा तिजोरी में छिपाने की बजाय कुछ पैसे ऐसे घर में डाल देना जहाँ से रात को बच्चों के रोने की आवाज़ें आती हों..!! ■

कविता

प्रकृति की संरचना

- लक्ष्मीनारायण भाला (लक्खीदा)

प्रति वर्ष मनें नव वर्ष।
मनों में हो अपरिमित हर्ष।।

प्रकृति की है अनोखी रचना।
चाँद-सूरज से काल-गणना ।।ध्रु।।

गगन में करते है विचरण।
तेज से ऊर्जा का वितरण।।
शीत और ताप वायु-नर्तन।
मेघ बन करे नीर-वर्षन।।
धरा है पंचतत्व का मेल।
करें हम धरती की वन्दना।। 1।।
प्रकृति की अनोखी...

पल-विपल-क्षण-क्षण का चिंतन।
रात और दिन का निर्धारण।।
बनें सप्ताह, पक्ष और माह।
वर्ष भर पर्वो का उत्साह।।
आगमन हो या हो प्रस्थान।
गीत खुशियों के ही गाना।।2।।
प्रकृति की अनोखी..

राम नवमी या कृष्णाष्टमी।
वर्ष प्रतिपद, विजयादशमी।।
अमावस दीपोत्सव लाती।
पूर्णिमा खीर पका देती।।
ग्रहण, नक्षत्र, राशिफल भेद।
विश्व ने भारत से जाना ।।3।।
प्रकृति की अनोखी..

प्रति वर्ष मनें नव वर्ष।
मनों में हो अपरिमित हर्ष।।

■

मकर संक्रान्ति कैम्पों की झलकियाँ

राममंदिर महिला समिति, कोलकाता

उल्टाडांगा महिला समिति, कोलकाता

अलीपुर महिला समिति, कोलकाता

मानिकतल्ला महिला समिति, कोलकाता

मध्य हावड़ा समिति, हावड़ा

रिसड़ा समिति, हावड़ा

विष्णु वाटिका महिला समिति, हावड़ा

हनुमान भक्त मण्डल महिला समिति, हावड़ा

कोलकाता और हावड़ा अंचल की हिम्मत को सलाम है।
सवा सौ शिविरों का आयोजन सेवा भाव का पैग़ाम है।।

बागमुण्डी छात्रावास का भव्य उद्घाटन

बागमुण्डी छात्रावास का यह नवीन अध्याय है।
सुसंस्कारित छात्र हमारे देश का सुंदर भविष्य हैं।।

Printed Matter

Book - Post

If Undelivered Please Return To :

Purvanchal Kalyan Ashram

161/1, Mahatma Gandhi Road
Bangur Building, 2nd Floor
Room No. 51, Kolkata-700007
Phone : +91 33 2268 0962, 2273 5792
Email : kalyanashram.kol@gmail.com